International Indexed, Refereed Research Journal, ISSN 2250-253x (Print), E-ISSN-2320-544x, Issued -7, Vol- I, July, 2013

शोध पत्र- दृश्यकला

उदयपुर में छापाकला की शुरूआत एवं विकास

* चिमनाराम डाँगी

* शोध अध्येता, दृश्यकला विभाग, मो. ला. सु. वि. वि. उदयपुर

दृश्य–कला के क्षेत्र में छापाकला का एक महत्वपूर्ण स्थान है। यह विधा भी अन्य विधाओं की ही भॉति स्वतंत्र अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। आज भले ही इसमें अनेको मौलिक प्रयोग हो रहे है और स्थानीय कलाकार देश–दुनियॉ में अपनी पहचान बना रहे हों; लेकिन जब हम उदयपुर में छापाकला की शुरूआत एंव विकास पर विचार करते है तो इसका प्रारम्भ शासकीय मुद्रणालय के रूप मे हुआ । छापाकला के मुख्य दो पहलु है– एक छपाई तकनीक का व्यावसायिक प्रयोग और दूसरा इसी माध्यम में चित्रण द्वारा भावाभियक्ति। उदयपुर में छापाकला की शुरूआत राजकीय मुद्रणालय के रुप में हुई; जिसकी स्थापना सन् 1881 ई. मे स्थानीय महाराणा द्वारा सरकारी गजट और किताबों तथा प्रपत्रो के प्रकाशन के उद्धेश्य से की गई। कालान्तर में किताबो के प्रति आम व्यक्ति की दिलचस्पी बढने लगी और व्यावसायिक पुस्तको के प्रचलन मे तेजी आई। सर्वप्रथम लालचंद ब्लॉक द्वारा बनाना प्रारम्भ किया। यह पुस्तको में आक"ाण को कायम रखने के लिए अक्षरो के साथ चित्रो के ब्लॉक भी लकडी पर उकेर कर बनाते थे। इस क्रम मे "मोती ब्लॉक" का नाम विशे"ा प्रसिद्व हुआ।

उसने का"ठ–उत्कीर्णन में महीन रेखाओ द्वारा चित्रो में छाया–प्रकाश का प्रभाव पैदा किया। उसने बाजार में बढ रही प्रतिस्पर्धा को देखते हुए लकडी की जगह धातु पर अम्लांकन द्वारा प्रयोग कर मुद्रण कार्य में एक नयी परम्परा को जन्म दिया।

1964–65 के आसपास राजस्थान के उदयपुर में स्नातकोतर स्तर की शिक्षा दिये जाने का प्रावधान बना। इससे नये युवा कलाकारों का जन्म हुआ। इसके साथ ही धीरे धीरे देश में छापा चित्रकला को भी महत्व मिला। भारत में सबसे पहले पुर्तगालियों ने गोवा में सन 1556 मे पहला छापाखाना स्थापित किया। सर्वप्रथम 1973 में राज्य में प्रथम एंचिग प्रिंटिग प्रेस उदयपुर विश्वविधालय में स्थापित हुई। इससे पूर्व वुडकट लिनोकट, मोनोप्रिंट ही हुआ करते थे।

बीती शताब्दी का अस्सी और नब्बे का दशक 'उदयपुर का कला जगत' विशे"ा यादगार साबित हुआ। इस काल में स्थानीय कलाकारों और कला–छापो में गजब का उत्साह नजर आया। 1972–73 के बीच उदयपुर विश्वविधालय के सुप्रसिद्व दो चित्रकार सुरेश शर्मा व लक्ष्मीलाल वर्मा के मार्गदर्शन मे ड्रांईग एंव पेन्टिंग का विकास हुआ था। उस समय सुरेश शर्मा 1968–70 के मध्य दो व"ाों के लिए ब्रुकलिन आर्ट स्कूल (अमेरीका) में चित्रण एवम प्रसिद्ध 'प्रेट सस्था' के ग्राफिक स्टूडियो में छापाचित्रण का प्रशिक्षण प्राप्त कर आये तथा राज्य मे इस विधा को नये रूप मे स्थापित किया। समयान्तराल में छापाचित्रण की इसी कडी में सुरेश शर्मा ने जिंक प्लेट पर डीप बाइट की अम्लांकन के साथ स्टेंसिल विधि के भी प्रयोग किये। हार्ड एज तथा सोफ्ट ऐज प्रयोगों का प्रभाव आया।[2]

व"ाों 1974–1978 के बीच वशिष्ट चित्रकार लक्ष्मीलाल वर्मा ने कार्ड बोर्ड पर फेविकोल की टेक्सचर युक्त सतह पर छापाकृतियॉ रची, जो भावी पीढी के लिए प्रेरणादायी साबित हुयी। छापा रचनाओ पर विभिन्न परीक्षणो की इसी श्रृंखला में स्थानीय चित्रकार शैल चोयल 1976 में लंदन स्थित स्लेड कॉलेज से ग्राफीक की विशे"ा तालीम लेकर स्वदेश लौटे और अपने साथी मित्रो के साथ एचिंग में एक्वाटिंट तकनीक को इस्तेमाल कर छापा चित्रण में जुट गयें। इसी काल के दौरान विधासागर द्वारा सन् 1980 से 1985 के बीच सृजित किये श्वेत–श्याम अम्लांकनो ने न केवल जयपुर के अपितु उदयपुर के कलाकारो को भी प्रभावित किया। स्थानीय नगर में स्थित सुखाडियॉ विश्वविधालय के 'दृश्यकला (चित्रकला) विभाग' में संचालित स्नातकोतरीय पाठ्यक्रम का एक मोटा हिस्सा छापा–चित्रण का हैं, जहॉ कला विधार्थी पुरे उत्साह से नीत नवीन प्रयोग करते आ रहे हैं। स्नातकोतरीय अध्ययन के उपरान्त उचित सुविधा के अभाव में वे सिने में लाख सम्भावनाऍ छुपी होने के बावजुद अपने आपको असहाय महसुस करते हैं। तमाम असुविधाओ और मुश्किलो के बावजुद पिछले तीन दशकों में उदयपुर ने न केवल प्रदेश को अपितु देश के कला जगत को देदीप्यमान प्रतिभाऍ जैसे मीना बया, रामकष्ण शर्मा, रविन्द्र दाहिमा, शाहिद परवेज, कमल जोशी, चिमन डॉगी, छगन पटेल, मोहनलाल, सुनिल निमावत, शर्मीला आदि प्रदान की है। शाहिद ने अपनी तस्वीर को क्रमशः प्योरीफाई किया है। उसके काम धीरे–धीरे विवरण से दूर होकर नियत संयोजित मुद्रा में आये है। किंचित लोक कल्याण एवं व्यंग्यात्मक मुद्राओं से सज्जित शाहिद की मानवाकृतियों एक संगठित अवलोकन का परिणाम है।[3]

मीना बया, राजस्थान की समकालीन के संदर्भ में एक जाना पहचाना नाम हैं। वह मूलतः एक प्रयोगधर्मी कलाकार है, जो लोककला रूपो, पराम्परागत चित्र–अन्तराल के विभिन्न बिम्बो को छापा माध्यम मे संयोजित कर बखुबी ढंग से भावो को

अभिव्यक्त करती हैं।[4] वही रामकृष्ण शर्मा अपनी पेंटिग्स के अनुरूप ही छापा–संयोजनो में भी यथार्थ परक और अतिरंजित आकारो को तवज्जो देकर अपनी सृजनधर्मिता अंजाम देते हैं। युवा कलाकार चिमन डॉगी छापाकला में प्रयुक्त होने वाली विविध तकनीको यथाः वुडकट, एंचिग, कॉलोग्रफी, सेरीग्रफी आदि पर उनका गजब का कमांड है और वह इस क्षेत्र में युवा प्रतिभाओ को पुरी शिद्दत से प्रोत्साहित करते हैं। स्थानीय छापाकार रविन्द्र दाहिमा सेरीग्रफी माध्यम से जीवन के विभिन्न पहलुओं सुख, दुःख, हॅसी, विशाद आदि विभिन्न मुद्राओ को फोटो ट्रांसफर प्रकिया द्वारा दीप्त रंगो में रचते है, जो दर्शक के मानस–पहल पर गहरी अनुभूति छोडते है।

उपरोक्त वर्णित कलाकारो के अलावा भी उदयपुर में छापा कलाकारो का एक बहुत बडा वर्ग मौजुद है, जिन्हे लेख के शब्दो में बाधना कुछ मुश्किल प्रतीत होता है। लेकिन यह तय है कि सन् 1881 ई. मे राजकीय मुद्रणालय के रूप मे आरम्भ छापाकला समय के अनुरूप अपने स्वरूप में पर्याप्त तब्दीलियॉ करते हुयी आज पर्यटको की मॉग के कारण कला बाजार का मूल घटक बन गई है।

संदर्भ ग्रंथ

1 शर्मा, श्याम, काष्ठ छापा कलाः समकालीन सार्थकता पृष्ठ 17, समकालीन कला, अंक 18, नवम्बर 2000; ललित कला अकादमी, दिल्ली
2 चोयल शैल, समकालीन राजस्थानी कलाः एक विशलेशण, समकालीन कला, अंक 18, नवम्बर 2000; ललित कला अकादमी, दिल्ली
3 द्विवेदी, डॉ. हेमन्तः कला जगत को समद्ध करती राजस्थान की नई पौध, पृ 65 क्षेत्रीय समकालीन कला, अंक 2
4 चोयल शैल, राजस्थान की छापा चित्रकला प्रवृतियॉ और नई दिशाऐं पृ 59, समकालीन कला, अंक 29, ललित कला अकादमी, दिल्ली